1

# 'दशोरा' जाति का उद्‌भव

## (एक परिचय)

### मनुष्य जाति का विभाजन –

सृष्टि के आरंभ में मनुष्य मात्र एक जाति थी जो अन्य प्राणियों से रूप, रंग, आकृति, मानसिक विकास आदि के कारण भिन्न थी इसलिए इसे एक जाति माना गया फिर भी इसमें कई प्रकार की विभिन्नताएँ व असमानताएँ थी जिनको लेकर इसमें कई प्रकार के भेद हो गये। इन भिन्नताओं में सर्वप्रथम स्त्री व पुरूष का भेद हुआ। जनसंख्या वृद्धि के कारण ये अपने – अपने समूहों में भिन्न – भिन्न स्थानों पर रहने लगे तथा उन क्षेत्रों पर अपना अधिकार भी जमा लिया जिससे इनको भारतीय, चीनी, योरोपियन, अमेरिकन, अफ्रीकन आदि कहा जाने लगा। फिर रंगों के कारण इनको काला, गोरा, पीतवर्ण आदि कहा जाने लगा। इसी प्रकार खान–पान की भिन्नता से इन्हें शाकाहारी व मांसाहारी कहा जाने लगा। मानसिक विकास के कारण इनमें विद्वान व मूर्ख का भेद हो गया। धर्म के कारण इनको हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई आदि कहा जाने लगा। आर्थिक आधार पर फिर धनी व निर्धन में भेद हो गया। राजनीति के कारण इनको समाजवादी, साम्यवादी आदि कहा जाने लगा। उपासना पद्धतियों के कारण इनमें शैव, वैष्णव, बौद्ध, जैन आदि भेद हो गये। उम्र के कारण इनको बालक, युवा, वृद्ध आदि कहा जाने लगा। इसी प्रकार विचार भेद, रहन–सहन, रीति–रिवाज, रूचियों, सम्प्रदाय, मत, पंथ आदि में भेदों के कारण यह एक ही मनुष्य जाति खंड–खंड में विभक्त होकर रह गई। इस सम्पूर्ण विभाजन का कारण मनुष्य की मानसिकता ही है जिससे वह स्वयं को दूसरे से भिन्न मान लेता है जबकि प्रकृति में ऐसा कोई विभाजन नहीं हैं।

### भारत में जातियों का विभाजन :–

भारत की मान्यता के अनुसार यह सम्पूर्ण मानव जाति प्रकृति के सत्व, रज व तम गुणों के प्रभाव के कारण चार वर्ण वाली बन गई, जिनमें सत्वगुण प्रधान व्यक्ति 'ब्राह्मण', रजोगुण प्रधान व्यक्ति को 'क्षत्रिय', रज एवं तम प्रधान को 'वैश्य' तथा तमोगुण प्रधान व्यक्ति को शूद्र कहा गया। यह भारत की वर्ण व्यवस्था थी जिसे किसी व्यक्ति ने नहीं दी बल्कि प्रकृति के गुणों के अनुसार स्वाभाविक रूप से बन गई। प्रत्येक मनुष्य की रूचियों में भिन्नता का कारण प्रकृति के ये गुण हैं जिनके अनुसार उसका स्वभाव बनता है तथा अपने स्वभाव के अनुसार ही वह अपने लिए भिन्न – भिन्न कर्मों का निर्धारण करता है। यही उसका कर्म विभाग है। गीता में (4/13) कहा गया है कि "यह चार वर्ण वाली सृष्टि गुण एवं कर्म विभाग से मेरे द्वारा (ईश्वर द्वारा) रची गई है।" अर्थात् यह प्रकृति के गुणों द्वारा रचित है। प्रकृति के इन गुणों के अनुसार जिस व्यक्ति का जैसा स्वभाव बन जाता है उसे उसी वर्ण का माना जाता है।

इस वर्ण व्यवस्था के बाद स्मृति काल में समाज व्यवस्था की दृष्टि से इन चार वर्णों को चार जातियों का रूप दे दिया तथा अपने ही वर्ण (जाति) में विवाह करने का नियम बना दिया। इसी से इन वर्णों ने जाति का रूप ले लिया जिससे सर्व प्रथम इन चार जातियों का आविभवि हुआ। भारत में सर्वप्रथम इन चार ही जातियों की प्रधानता थी जिससे अपनी ही जाति में कन्या लेन–देन व भोजन व्यवहार प्रचलित था। इस